अष्टमुख गंड भैरुंड नृसिंह

ॐ अस्य श्री अष्टमुख गंड भैरुंड नृसिंहस्य संकर्षण भगवान ऋषिः त्रिष्टुप छंद अष्टमुख गंड भैरुंड नृसिंहो देवता ख्रौं बीजं ह्रौं शक्ति गंडभैरुंडाय कीलकम् श्री गंड भैरुंड नृसिंह प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

न्यास

ख्रौं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः

ह्रौं मध्यमाभ्यां नमः

ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः

ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ख्रौं ह्रीं ह्रौं ह्रैं ह्रौं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

ध्यान

(1) वंदेहं घोरघोरः प्रबलतर महागंड भैरुंड सिंह व्याघ्रास्य क्रोडशाखा मृग मृग वर शरभ उलूक लघु काद्यष्टवक्त्रं द्वात्रिंशत्कोटि बाहुं ज्वलमुसल गदा शंख चक्रादि हस्तान्विभ्राणं भीमदंष्ट्रं शरभ खगगजान् भक्षयंतं नृसिंहं।

Notes

(2) कल्पांत ग्लानि विस्फुलिंग हुत हुतभुक ज्वाल वल्य नेत्र

दंष्ट्र कील वज्र समान तुंड नख रैरदंष्ट्राग्नि जिह्वानने पक्षौ

मारुत सप्तक सप्तधात धरणी मध्यानने भीषणं प्रच्छेद

ध्यायेद् दुहृत् रौद्र शरभम देहं गंडभैरुंड सिंह अव्यास्याद् वहि

दृष्टि दुर वरनखा विद्युज्वालाग्नि जिह्वा मारी भी मां च

पक्षौ हृदय जठर गौ अधःकालाग्नि रुद्रौ रुद्र कालो खगमृग नृहरि गंड

भैरुंड रूपा विद्धस्तः शरभादि भैरवगणान् शत्रून् चक्रो हरि (3)

इति ध्यात्वा 'मनसाउपचार मानसैपचारैस पूज्य:

मूल मंत्र

ॐ ह्र

ॐ ध्रौं ह्रौं [illegible] ज्रौं क्ष्रौं द्रौं ध्म्रौं ह्रीं फट् गंडभैरुंड नृसिंहाय

महा शरभांतकाय हुं फट् ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल

सर्वशत्रु छिंधि छिंधि छिंदि छिंदि हंति हंति हन हन

खं फट् स्वाहा ।। ॐ अधमुखगंडभैरुंड अघोर महा पक्षिराजाय

इंद्र मंडले गजारूढाय वज्र हस्ताय इंद्रदिशां बंध बंध

मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा ।।

ॐ अघोर नृसिंहाय अग्नि मंडले मेषारूढाय

Notes

मेषारूढाय शक्तिहस्ताय अग्नि दिशं।।

APR '99

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
•	•	•	•	01	02	03
04	05	06	07	08	09	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	•

बंध बंध मीं रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हूं फट्
स्वाहा' ॐ अघोरव्याघ्रराजाय यममंडले
महिषारूढाय दंडहस्ताय याम्यां दिशां बंध बंध
सर्वभूतेभ्यो हूं फट् स्वाहा ॥

(3) ॐ आदिहयग्रीवाय निऋति मंडले नरारूढाय कुंतहस्ताय
निऋति: दिशां बंध बंध मीं रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हूं
फट् स्वाहा

ॐ आदिवराहाय वरुणमंडले मकरारूढाय पाशहस्ताय
वरुणदिशा बंध बंध मीं रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हूं फट्
स्वाहा

ॐ अंजनाधिप अंजनेयाय (वायुमंडले हरिणवाहनाय) ध्वजहस्ताय वायव्या
दिशा बंध बंध मीं रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हूं फट्
स्वाहा

ॐ अघोर गजमहागरूढाय कुबेर मंडले अश्वारूढाय
खड्गहस्ताय कुबेरदिशां बंध बंध मीं रक्ष रक्ष
सर्वभूतेभ्यो हूं फट् स्वाहा

ॐ अघोर भल्लूकमहाराजाय ईशानमंडले
वृषारूढाय शूलहस्ताय ईशान दिशां बंध
बंध मीं रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हूं

फट् स्वाहा
ॐ अघोरनारायणाय आकाश मंडले गरुड वाहनाय चक्रहस्ताय आकाश दिशा बंध बंध मां रक्षा रक्षा सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अघोरविराट् पुरुषाय पाताल मंडले शेषारुणाय सर्वायुधधराय पाताल दिशा बंध बंध मां रक्षा रक्षा सर्वभूतेभ्यो हूं फट् स्वाहा
ॐ आत्मरक्षा अष्टमुखगंड भैरंड अघोर पक्षा महापक्षि राजाय शरभसालुवेश्वर प्राणाय सकल शत्रु निवारणाय मां रक्षा रक्षा सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अघोरनारसिंहाय अघोरभद्र प्राणपहाराय सकल रोग निवारणाय सकल आरोग्यकराय मां रक्षा रक्षा सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अष्टमुख अघोरव्याघ्रराजाय महिष राक्षस प्राणापहाराय महामदोन्मताय महाव्यालाय महादीत्याय मां रक्षा रक्षा सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अष्टमुख आदि हयग्रीवाय ~~सकलमूर्खत्व~~ सकलमूर्खत्व मोचनाय सकलवेद

Notes

APR '99						
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
•	•	•	•	01	02	03
04	05	06	07	08	09	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	•

सकल शास्त्र सकलविद्याप्रदाय सकल शत्रु
भयक्षोभणाय सकलैश्वर्याय मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो
हुं फट् स्वाहा
ॐ अष्टमुख अश्विवाहनाय शारिद्र्य धारिद्र्यध्वंसाय
अष्टैश्वर्य आकर्षणाय अष्टपुत्रप्रदाय अखिलैश्वर्याय मां
रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अष्टमुख वानरेन्द्राय सकल ग्रहोच्चाटनाय सकल
राक्षस संहरणाय सकल सुरासुर वंदिताय सकल जीवनिवासाय
मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अष्टमुख अघोर पक्षिराजाय अष्टमहानागकुलान्तकाय
अष्ट महासर्पविष भक्षणाय वामरण वर्जिताय जगदीश्वराय मां रक्ष रक्ष
सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा
ॐ अष्टमुख महाभल्लूकराजा महाभयनिवारणाय आत्मगृह
भक्त गृह निवास संस्थिताय मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यो
हुं फट् स्वाहा अथ माला मंत्र पूर्ववत ऋष्यादि
हृदन्यासादि नमो भगवते अष्टमुख गरुड हौं
अघोर पक्षिराजाय अघोर नारसिंहाय

27 TUESDAY APRIL

अघोर व्याघ्रराजाय अघोर वीर नारसिंहाय अघोर आदि हय ग्रीवाय अघोर आदि वाराहाय अघोर वानरेन्द्राय अघोर पक्षि महागरुडाय अघोर महा भल्लुक महाराजाय अघोर महाबल पराक्रमाय अघोर अघोर कोटि सूर्य प्रकाशाय वडवानल मुखाय करालवदनाय वज्रशरीराय वज्रशीर्षाय वज्र तुंडाय वज्र दंष्ट्राय वज्र दंताय वज्र भुजाय वज्र हस्ताय वज्र नखाय ~~वज्र पुछ~~ वज्र पुछाय वज्र पुच्छाय वज्र पादाय दुर्निरीक्षाय अनिवारित कोपाय अपरिमिता ट्टहासाय

अनेक कोटि ब्रह्मांड भस्मोद्धूलित शरीराय अनेक कोटि ब्रह्मांड ... अनेक कोटि ब्रह्मांडोदर। मौक्तिकालंकृत कंठाय अनेक कोटि ब्रह्मांड नायक अनेक कोटि शीर्षाय अनेक कोटि भुजाय अनेक कोटि हस्ताय अनेक कोटि दिव्यायुध धराय अनेक कोटि पादाय अनेक कोटि कनक गिरि नवरत्न मुकुटालंकृत मस्तकाय अनेक कोटि कनकगिरि नवरत्न कंकणालंकृत करणाय अनेक कोटि कनकगिरि नवरत्न नुपुरालंकृत कराय अ अनेक कोटि प्रथम गणशरीर शोभालंकृताय श्री शालुकेश्वर प्राणापहराय एकादश रुद्र गर्वहराय

Notes

अप्रमेय प्रभंजनाय अलंकृताय

APR '99

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
•	•	•	•	01	02	03
04	05	06	07	08	09	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	•

जगन्मुखं तकाय अघोरवीरभद्रप्राणापहाराय
महानदी मर्दनाय एह्येहि आगच्छ आगच्छ
अवतर अवतर गर्जी गर्जी भीषय भीषय स्फुर स्फुर
अघोरघोर तनुरूपाय अनुरूप वंध वंध चट चट प्रचट प्रचट
प्रहर प्रहर प्रलय प्रलय ज्वल ज्वल प्रज्वल
प्रज्वल दह दह पच पच हन हन धुरु धुरु
धुरु धुरु आक्रदय आक्रदय परिवेषय परिवेषय
पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर नैऋत्य आग्नेय वायव्य ईशान पाताल
ऊर्ध्वांतरिक्ष सर्वदिक् विदिक् सर्वदिशा: ज्वाला सुदर्शन चक्रेण
वंधय वंधय अभिमन्त्र भूतमंडल प्रवेशाय प्रवेशाय
ओं ओं भूतमंडलं यमपाशेन वंधय वंधय ह्रीं ह्रीं
भूतमंडलेन मोहनास्त्रेण मोहय मोहय क्रौं क्रौं
भूतमंडल यम अंकुशेन अंकुशेन अंकुशेन
कर्षय कर्षय भूतमंडलं स्तंभनास्त्रेण केशादि पाद पर्यंतं
स्तंभय स्तंभय ह्लरीं ह्लरीं भूतमंडलं ब्रह्मास्त्रेण
जिह्वां कीलय कीलय कं रं भूतमंडल नाथय
नाथय भूत प्रेत पिशाच चोरग शाकिनि डाकिनि

Notes
कामिनि मोहिनि यक्ष राक्षस कूष्मांड वेताल
ब्रह्मराक्षस मारी महामारी मधु रेणु

कालरात्रि काल मृत्युरपमृत्यु प्रलय काल
प्रलयाग्नि रुद्रभय यमदूतभय अभेद्यग्रह
असाध्यमहान छेदय भेदय बं बं बाधय बाधय
यं यं यात यात शं शं शोषय शोषय रं रं वध वध
क्षं क्षं क्षोभय क्षोभय खं खं खादय खादय घं घं
घातय घातय तं तं तापय तापय हं हं हरय हरय
टं टं टोटय टोटय भ्रां भ्रां भ्रामय भ्रामय रीं रीं रीटरीट
मं मं मोहय मोहय गं गं गुलु गुलु विं विं विलु विलु
तुं तुं तुतु मिं मिलि मिलि ~~मुरु मुरु मं मुरु मुरु~~

मं मुरु मुरु हीं हिलि वं वज्रपातेन मर्दय मर्दय
मुं मुसलेन ताडय ताडय गं गदाघातेन चूर्णय
चूर्णय पं वज्र नखेन कृंतय कृंतय खं खड्गेन
खंडय = २ चक्रेण छेदय = २ मं मारय = २
ध्रौं अष्टमुख गंडभैरंडाय महापक्षिराजय हूं ~~अघोरवीर~~
अघोरवीरनारसिंहाय ख्यैं अघोरव्याघ्रराजाय ~~ह्रौं~~ ह्रौं
आदिहयग्रीवाय हूं हूं आदि वाराहाय ध्रौं

Notes

APR '99						
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
•	•	•	•	01	02	03
04	05	06	07	08	09	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	•

अघोर वानेंद्राय ह्रीं अघोर पद्ममहागरुडाय
ह्रीं भल्लूक भराजा। य सर्वजन मनोहराय
सर्वमुख रंजनाय सर्व राजवशीकराय सर्व शत्रुभेद काय
सकलविद्या प्रदाय सकल विज्ञानप्रदाय त्रिमूर्ति जनकाय
~~त्रिगुण स्वरूपाय~~ निर्गुण स्वरूपाय प्रियाय अघोरवीर
पुरुषाय अघोर विश्वेश्वरी मनोहराय अघोर
नारायणाय अघोर लक्ष्मी प्रियाय स्वाहा। ॐ अघोरवीर
नृसिंहाय नमः ह्रीं नमः भगवते आमुख गंड भेंड
ज्वाला नृसिंहाय दैव दानव पूजिताय प्रदीप्ताय
कोटि आदित्य कोट्यादित्य महा तेजसे वज्र नख दंष्ट्रायुधाय
(युधाय) स्फुट विकीर्णके शाटहासाय क्षुभित महार्णव
दुंदुभि निर्घोषाय सर्व मंत्रोच्चारण हृदयाय स्फुटेहि
भगवान्नारसिंह पुरुषवरसत्यान स्फुर स्फुर
~~विजृम्भ~~ विजृम्भ = २ सिंहनाद मुंच ~~सिंहना~~ = २
विद्रावय = २ मर्दय = २ आवेशय = २ त्रासय
= २ सर्व मंत्राणि सर्व यंत्राणि सर्व मित्र जाति रूप
हन = २ सम साक्षिण्य = २ धारय = २
ज्वाला स्फुट = २ ज्वलय = २
भाल संघातेन सर्व पातालान्

MAY '99
Su Mo Tu We Th Fr Sa
30 31 • • • • 01
02 03 04 05 06 07 08
09 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29
Notes

MAY

01 SATURDAY

उच्चारयो = २ सर्वतोनंत ज्वालावज्रशरीर
पंजरेण सर्वपातालान् सुरलोकवासिनां
नरलोकवासिनां ह्युमाकर्षय ह्युमाकर्षय धुनि = २
शीर्षं = २ दह = २ पच = २ मथ = २ छिंदि पचि = २
निकृंतय = २ ~~क~~ तावद् यावदवैक ~~क~~
कन्य समागतं पातालेभ्यः फट् असुरेभ्यः फट्
जि जातेभ्यः फट् मंत्राणिभ्यः फट्
सर्व मंत्राकर्षणान भक्षय = २ औं अष्टमुखगंडभैरव
ज्वाला नारसिंह विष्णोः सर्व पातालेभ्यः
सर्व ~~पाप ग्रहेभ्यः फट्~~ पापग्रहेभ्यः पदवेभ्यः
सर्व मंत्रा छिदयेश्य रक्ष = २ भ्रूं औं ह्रीं ह्रं ह्रौं

02 SUNDAY

हुं फट् स्वाहा

इति अष्ट वार पठित्वा उत्तरन्यास
ध्यान मानसे संपूज्य ।

इति अष्टमुखगंडभैरवदंडकस्य
नवमाला तथा ह रक्ष

Notes

श्री लक्ष्मीनृसिंहार्पणमस्तु

MAY '99

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
30	31	•	•	•	•	01
02	03	04	05	06	07	08
09	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29